* ओ३म् *

सारा शरीर लोहूसे, अपना भिंगो दिया ।
परबुज़दिलीके दाग़से, माथा बचालिया ॥

धर्मबलिदान

पथिकवियोग ।

अर्थात्

धर्मवीर पं० लेखराम जी आर्यपथिक का
स्वर्गवास ॥

॥ पुस्तक मिलनेका पता बाबूराम शर्मा - इटावा ॥

॥ ओ३म् ॥

धर्मबलिदान

पथिकवियोग

* अर्थात् *

धर्मवीर पं० लेखरामजी आर्यपथिकका स्वर्गवास

जिसे

बाबूराम शर्म्मा इन्द्रराजखी इटावास्थने

धर्मवीरकी धर्मबलिदान सूचनार्थ

प्रकाशित किया ॥

Printed by P. Brahmadeo Sharma at the
Brâhma Press——Etawah.

प्रथमवार	वैशाख मास	मूल्य
२०००	संवत् १९६१	=)

ओ३म् परमात्मने नमः ॥

गुणग्राही गुणियोंकी सेवामें निवेदन।

महाशयो ! आपको भली भांति विदित है कि एतद्देशमें ग्राम २ घर २ यहां तक कि बड़े २ नगरोंमें भी प्रचलित आल्हाकी भरमार हो रही है इस से श्रोताओं और पाठकों पर जो प्रभाव पड़ता है वह आपसे छिपा हुआ नहीं है। इसमें आपस ही की झूंठी सांची घरेलू लड़ाई झगड़ेकी बातें भरी पड़ीं हैं इससे देशका कोई लाभ व कल्याण नहीं हो सकता है। परन्तु आल्हा-ध्वनि प्रेमियोंको कोई उत्तम शिक्षाप्रद आल्हा ग्रन्थ नहीं मिलता है और न तयार ही है जो उनको उचित शिक्षा भी दे और मनमोद भी बढ़ावे ॥

इस अभावको दूर करनेके लिये मैंने धृष्टतावश तथा तुच्छ बुद्ध्यनुसार साहस कर प्रथम ही प्रथम सन् १८९६ सितम्बर मासमें सजीवनबूटी (वीर्य-वर्णन) नामक पुस्तकको आल्हा ध्वनिमें रचकर प्रकाशित किया था ॥

इस तुच्छ भेंटको इष्ट मित्रों तथा गुणग्राहियोंने सादर स्वीकार कर खूब ही अपनाया तथा मेरा साहस अधिक बढ़ाया। पुस्तक छपते ही हजारों कापी हाथों हाथ उड़ गईं—धर्मात्माओंने सैकड़ों कापी खरीद (क्रयकर) धर्मार्थ बांट दीं—समाचार पत्रों तथा धर्मोपदेशकोंने भी अधिक प्रसिद्धि की ॥

ततः धर्मवीर पं० लेखराम जी आर्य्यपथिककी धर्मवलिदान सूचनार्थ धर्मवलिदान पथिकवियोग सन् १८९७ जून मासमें आल्हाध्वनिमें प्रकाशित किया। इसकी भी सहस्त्रों कापी हाथों हाथ विक गईं। इस तुच्छ भेंटसे प्रसन्न हो, पाठकोंने प्रशंसापत्र भी भेजे कन्नौज निवासी श्रीयुत बाबू लक्ष्मीनारायण जी वर्माने पारितोषिकार्थ द्रव्य भेजकर भी सहायता की, आपने अपनेको अपनाया है—अतः मैं भी धन्यवादमात्र देता हुआ सेवा कर रहा हूं ॥

पाठक गणो ! यदि इसमें कहीं कोई अशुद्धि ज्ञात हो तो मुझे उचित शिक्षा सम्मति दे चिरबाधित करें। और छापे आदिकी अशुद्धि तो स्वयमेव सम्हाल लें और यदि किसीके चित्तमें दुश्चिन्ता चुभे तो भी अपना जन जान भूल चूक क्षमा कर उचित शिक्षा दें ॥

(२)—अब आगे भूतवर्णन, गवादि पशुओंकी पुकार, शूरवीर, रणजीत बहादुर राजपूतोंका वीर पमारा आल्हा ध्वनिमें लिखा जायगा; इससे ग्रामस्थ भी वीरवृत्तान्त इतिहाससे लाभ उठा सकेंगे ग्राहकगण ग्राहकोंमें नाम लिखावें ॥

आपका क्षमा प्रार्थी—बाबराम शर्मा—इटावा

॥ ओ३म् ॥

॥ धर्म्मबलिदान=पथिकवियोग ॥

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्त्ते रराव्णः । पाहि री-
षत उतवा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठ्य ॥ऋग्वेद१।३।१०।१५॥

हे सर्वशत्रु दाहकाग्ने परमेश्वर! राक्षस हिंसाशील दुष्ट स्वभाव देहधारियों से (नः) हमारी (पाहि) पालना करो (धूर्त्तैरराव्णः) कृपण जो धूर्त्त उस मनुष्यसे भी हमारी रक्षा करो जो हमको मारने लगे तथा जो मारनेकी इच्छा करता है। हे महातेज बलवत्तम ! उन सबसे हमारी रक्षा करो ॥

॥ आल्हा खण्ड २ ॥

ओङ्कारकी स्तुति करिये, जो है सकल सृष्टि आधार।
सुर मुनि जाको ध्यान लगावें, महिमा जाकी अपरम्पार ॥१॥
जाके सुमिरें जग सुख पावै, तीन ताप सब मिटें कलेश ।
परमानन्द परम पद पावै, पावै परम धाम परमेश ॥ २ ॥
करें नमस्ते पार ब्रह्मकों, जाको नाम श्री ओङ्कार।
आश्रय जाके सब जग राजै, करे महाप्रलय संहार ॥ ३ ॥
हे जगबन्धो करुणा सिन्धो !हे श्री ओङ्कार भगवान् !।
भारतवासिनकी सुधि लै लेव,हे !जगदीश्वर कृपानिधान ॥४॥
दस्यु अनारी अत्याचारी, डांकू जुलम करें बटमार ।
पथिक बटोहिनकों घर लूटें,कोई पुन डारें जानसे मार ॥५॥
असुर धूर्त्तनसे रक्षाकर, हे ! सब शक्तिमान् जगराय ।
जे दुश्चिन्तक हैं दुनियांके, जर मूलहिंसे देव नशाय ॥ ६ ॥
असुर राक्षस दल गल गाजें, जगमें मच रहो हाहाकार।
छाय अविद्या रही धरतीपै, नहिं कोई करे वेद परचार ॥७॥
झुकी अंधिरिया मतवादिनकी, और घन घोर घटा अज्ञान ।
वैदिक भानू छिपो तिमिरमें, बढ़ी देशमें दुःख महान ॥८॥
घिरी अंधिरिया भूमण्डलपै, अन्धाधुन्ध रहो जग छाय।
चोर डांकुअनकी बनआई, लूटें देश अंधेरा पाय ॥ ९ ॥

बाग बिनाशें कहुं चिमगादर, घुघुआ उड़ उड़ द्वन्द मचायं ।
स्यार सिढ़ौआ निधड़क डोलें, सोवत सिंह आर्यन पाय ॥१०॥
हवन यज्ञ तप भूमि बिगारैं, कौआ कूकुर गीध शृगाल ।
कामधेनु व्याकुल भई रोवै, हे ! दुख भञ्जन दीनदयाल ॥११॥
हाहाकार शृगाल मचावें, कान न डारी बात सुनाय ।
जीव जन्तु व्याकुल भये तलफें, प्राण चराचर रहे गमाय ॥१२॥
अन्धाकुप्प देशमें छायो, मचो महा बेंड़ो घमसान ।
बीर क्षत्रियनकी अब जननी, दीखै महाघोर श्मशान ॥१३॥
तपोभूमि ऋषियनकी उजड़ी, देखैं छाती फटै हमार ।
मातृभूमिको दुखड़ा देखें, आंखिन बहै रक्तकी धार ॥१४॥
भारतवासी कठिन नींदमें, सोवैं बेसुध पांव पसार ।
भूमि अभागिन दुखड़ा रोवै, सुनै न कोई टेर पुकार ॥१५॥
महाप्रलय सम बढ़ा अंधेरा, लखै न हाथों हाथ पसार ।
पड़े अंधेरेमें सब रोवें, नजर न सूरज पड़ै हमार ॥ १६ ॥
तुम सन विन्ती है जगदीश्वर, हे विश्वेश ! विश्वपतिराय ।
महाविपत आफत छाई है, अब सङ्कटमें होव सहाय ॥१७॥
वैदिकभानू अब परकाशो, मिटजाय तिमिर होय परकाश ।
कृपा करके हे ! करुणानिधि पूरण करो हमारी आश ॥१८॥
जब जब विपत परी भारतपे, तब तब तुमहीं भये सहाय ।
प्रकटे आपहिकी कृपासे, श्रीमद्दयानन्द जग आय ॥ १९ ॥
घोर अविद्या जड़से मैटी, कर कर वेद धर्म उपदेश ।
भरतखण्डमें सूर्य उदय भयो, कीरति फैली देश विदेश ॥२०॥
वैदिकभानूने वसुधा पै, वैदिक धर्म किया प्रचार ।
गौ कन्याकी व्यथा मिटाई, दूर करो भारतको भार ॥ २१ ॥
वेदसूर्य प्रकाशित करदयो, मिटो महा बैंड़ो अंधियार ।
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, चारों ओर किया प्रचार ॥२२ ॥

वैदिक शिक्षा सुन स्वामीकी, जन्में योधा वीर महान् ।
धर्म हेतु जीवन अर्पण कर, घर घर दये वेद व्याख्यान॥२३॥
ऐसिहि कृपा पुन अब करदेउ, बूड़त भारत लेव बचाय ।
सकल जगत् वदिकमत माने, झूंठे पन्थ नाश हुय जांय॥२४॥
धूम धर्मकी मचै देशमें, होय वेद विद्या प्रचार ।
ऋषि मुनियनको समयो आवें, होम यज्ञ होवें आचार॥२५॥
कलियुग काल धामको जावै, होय फेर सतयुग प्रचार ।
कारो मुंह कामी करजावें, ब्रह्मचर्यकी होय बहार ॥ २६ ॥
नगर नगरमें पण्डित घूमें, करें वेद विद्या प्रचार ।
स्वामी दयानन्द फिर जन्में, जारी करें वेद आचार ॥२७ ॥
लेखराम गुरुदत्त बहादुर, भारत फेर लेंयं अवतार ।
मतवादिनको मान हटावें, हरें अविद्यादिक अंधियार॥२८॥
करो प्रेरणा हे ! जगदीश्वर, सब जग चले वेद अनुकूल ।
वैदिक शिक्षाको परचारें, तजदेयं ग्रन्थ वेद प्रतिकूल ॥२९ ॥
पढ़ें पढ़ावें सुनें सुनावें, चारों वेद धर्म सुख मूल ।
* दशों नियम पुन जग परचारें, जो ऋषि दीने रत्न अमूल॥३० ॥
देश देश अरु द्वीपन द्वीपन, घर घर वेद करें प्रचार ।
झगड़ा मिटजांयं मतवादिनके, नाशें पन्थ अनारिन क्यार॥३१॥
कृपा करुणानिधि अब कर देव, फैलै धर्म आर्यन क्यार ।
वैदिक डङ्का बजै जगत्में, वदिक धर्म होय प्रचार ॥ ३२ ॥

भारतवर्षकी संक्षिप्त महिमा ॥

जननीजन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥

अब करैं नमस्ते ऋषिसन्ततिको, दोउ करजोर करेंप्रणाम।
महिमा सुनलेव भरतखण्डकी, जगमें आर्यभूमि सन्नाम॥३३॥
ऋषि मुनियनकी जो है जननी, जो है देश आर्यन क्यार।

---

*आर्यसमाजके दश नियम अवश्य पढ़िये ।) सैकड़ा॥

चक्रवर्त्तियनको उद्गम है, जो है स्रोत वेद प्रचार ॥ ३४ ॥
सिंह क्षत्रियनकी माता है, जिनके नाम लेय संसार ।
वीर आर्यनकी जननी है, बड़े बड़े असुर करे संहार ॥३५॥
नाहर जाये जा भारतने, दुनियां नाम सुने थर्राय ।
असुर राक्षस कहुं सुन पाये, मारे गर्द दये उड़वाय ॥ ३६ ॥
दस्यु डांकुअन कहुं लखपाये, तुर्तहिं काट करे खरिहान ।
गुप्त शत्रुअन शब्दबेध लये, मारे खेंच अग्नियां बाण ॥३७॥
योधा क्षत्री भारत जन्मे, कीरति जाने सकल जहान ।
अपनो दुसरिहानाकोई राखो, जोसपनेहुमें गहैकृपाण ॥३८॥
रही भूमि प्रसिद्ध जगतमें, अचल कोष माया भण्डार ।
पारसमणि जा भूमि देशकी, कथन करैं सारी संसार ॥३९॥
लोहरूप कंगाल विदेशी, छुअतहिं हुय गये मालामाल ।
कालचक्रके हेर फेरसों, रात दिना अब पड़ैं अकाल ॥ ४० ॥
हुय हुय दानिनको अब तलफें, अन्न बिना हा! प्राणगमायं ।
हुय गुलाम कोइ पेटकी खातिर, गिरजाघरमें मूड़मुड़ायं ॥४१॥
पड़कुसङ्ग कोई वने मुसलमां, कलमा पढ़े महजतन जाय ।
ऊंचे थे सो नीचे हुय गये, कालचक्रसों कहा वसाय ॥४२॥
भरतखण्ड जिहि पण्डित बोलें, जब कोई करें धर्म प्रचार ।
पुण्य क्षेत्र आवर्त्त आर्या, पढ़ सङ्कल्प करें उच्चार ॥४३॥
सब विद्यनका है घर भारत, जेई प्रसिद्ध आर्यावर्त्त ।
ब्रह्मदेश जाईकी शाखा है, जाय ऋषि कहें ब्रह्मआवर्त्त ॥४४॥
जाई भूमिमें प्रथम प्रकटो, भाई वेद धर्म प्रचार ।
आदि सृष्टि में ऋषियन द्वारा, चारोंवेद भये प्रचार॥ ४५ ॥
अग्नि वायु आदित्य अङ्गिरा, ऋषियनको गये वेद पढ़ाय ।
ब्रह्मादिक पुन भूमण्डलपै, वैदिक धर्म गयेफैलाय ॥ ४६ ॥
जगत् गुरु ब्राह्मणहियां जन्मे, जिनके नाम लेय संसार ।

चौदहु विद्याके ज्ञाता भये, पढ़ पढ़ वेद शास्त्र भण्डार॥४७॥
कर कर भ्रमण देशदेशमें, घरघर दये वेद व्याख्यान।
जुरें ऋषीश्वर सहस्र अठासी, मिसरिख नीमसार मैदान॥४८॥
जिन आश न राखी धनदौलतकी, ना कहुं जांचे राजदरवार।
छांड़ आशरा जिन्दगानीका, द्वीपनद्वीप किया प्रचार॥४९॥
सह दुख कन्द मूल फल खाये, पर न तजो धर्म प्रचार।
चारों दिशिमें वेद प्रचारे, ऐसे पण्डित भये अपार॥ ५० ॥
जाई भूमिपै ऋषिवर जन्मे, श्रीमद्दयानन्द महाराज।
वैदिक महिमा जग फैलाई, रच रच जहं तहं आर्यसमाज॥५१॥
इनही समाजनसे बहु प्रकटे, आर्य शूर वीर सिरदार।
जिन प्राण होम दये परस्वारथमें, राजपाट सुख दये विसार॥५२॥
तन मन धन कर देशके अर्पण, गये भूमिको भार उतार।
रात दिना उपदेश धर्मकर, गये देशको कर उद्धार॥ ५३ ॥
सहीं विपत् पर धर्म न छोड़ो, अन्धकारको गये हटाय।
कर गये सत्युग फेर देशमें, कलियुगकी काया पलटाय॥५४॥
धर्म्म अहिंसा जारी करके, बूचड़ खाना गये उठाय।
ब्रह्मचर्य उपदेश बताके, कसवी खाना गये छुड़ाय॥५५॥
वेद मार्ग सत्पन्थ बताके, अंधाधुन्धसे गये बचाय।
महा अविद्या नींदमें सोवत, कर कृपा अबगये जगाय॥५६॥
ऋषि मुनियनकी बात राख लई, वैदिक डंका गये बजाय।
गो कन्याको दुःख हटायो, बूड़त भारत लयो बचाय॥ ५७॥
जहर हलाहल विषको पीगये, दये भारत हित प्राण गमाय।
तुम्हरी करणीको को हुयहै, आंतें तलक दई कटवाय॥५८॥
कौनसे मुखसों लिखें हकीकत, करें कौन मुखसे वर्णन।
धन धन तुमको दुनिया बोले, करैं चराचर गुण कीर्त्तन॥५९॥
तुम हितकारी भरत खण्डके, तुम भारत हित दये प्राण।

तुम मतवादिन मौन सधाई, सबको मेंट दयो अभिमान ॥६०॥
धन धन भूमी भरतखण्डकी, धन धन देश आर्यन क्यार।
धन्य आर्यावर्त्त बहादुर, जामें वीर लेयं अवतार ॥ ६१ ॥
शर्मा महिमा क्या तू गावै, भारतभूमि स्वर्ग सुखधाम।
बज गयो डंका भूमण्डलपै, कीरत गावें लोक तमाम ॥६२ ॥

पं० लेखराम आर्यपथिकका स्वर्गवास ॥

ह्यांको बातें हियईं रहिगई, अब आगेकी सुनो विचार।
अब वर्णन है धर्मवीरका, साखे·सुनो आर्यन क्यार ॥ ६३ ॥
जौन बहादुर मनपै धर है, तर वैकुण्ठ धामको जाय।
शूर वीर धर्मज्ञ कहावै, अन्ते धर्मवीर कहलाय ॥ ६४ ॥
पीठ न फेरे धर्म्म युद्धसे, कायर सिंह रूप हुय जाय।
मौन सधावै मतवादिनकों, अल्ला तोबा देय मचाय ॥ ६५ ॥
भरी सभामें निधड़क बैठे, कोई बोलै कहा मजाल।
वेद धर्मकी महिमा जानें, मतवादिनको करै ज़वाल॥ ६६ ॥
अब लिखें हकीकत लेखरामकी, आर्य धर्म वीर अवतार।
आज्ञा शिर धर श्री गुरुवरकी, वैदिक धर्म किया प्रचार॥६७॥
एक दिन पण्डित शोचन लागे, भरत खण्ड कस गयो नशाय।
आंखिन देखें आसूं आवें, सोचें जिगर टूक उड़जाय ॥ ६८ ॥
देश दशा लख छाती धड़के, जियरा तड़प तड़प रहजाय।
हरो भरी जा भूमि आर्या, सो अब ऊजड़ मयी दिखाय !!! ॥६९॥
दूधकी नदियां जहां बहती थीं, तहां अब बहै रक्तकी धार।
जीव जन्तु जहां मौज करत थे, रात दिना अब चलै कटार॥॥७०
हवन यज्ञ शुभ कर्म छूट गये, नहिं रहा वेद धर्म प्रचार।
ऋषिमुनियनकी जन्म भूमिमें, धमसा मचे विधर्म्मिनक्यार॥७१॥
भरतखण्डमें भुके किरानी, घर घर यवन रहे ललकार।
जो जिहि आवै सोकर बैठे, निन्दा करै आर्यन क्यार ॥७२॥

जग उपकारी गौ विचारीं, विन अपराधै प्राणगमायं ।
पतिव्रताओंकी छातीपै, धूर्त्त रंडियां मजा उड़ायं ॥ ७३ ॥
ब्रह्मचारिनको तपोभूमिमें, जनखे भंडुए जंग बजायं ।
अन्धाधुन्ध नवाबी छायी, नियमन्यायसब गयेविलाय॥७४॥
ऋषि मुनियनके ग्रन्थ जलाये, वेद्शास्त्र सब दिये नशाय ।
मन्दिरतोड़मस्जिदेंकरदईं, और दये हवनकुण्ड खुदवाय ॥७५॥
रामकृष्णकी जन्मभूमिमें, अत्याचार जुल्म दिखलायं ।
* पुरीअयोध्यामथुराजीमें, मन्दिर अन्दर मियां पुजायं॥७६॥
काशीवासी विश्वनाथका, मन्दिर यवनन लिया दबाय ।
सोमनाथआदिकशुभधामा, खाकधूलिमें दिये मिलाय ॥७७॥
नाम पल्ट दये ऋषि नगरनके, औ करदये मुहम्दाबाद ।
तीर्थराजप्रयाग गङ्गतट, धरदयो नाम इलाहाबाद ॥ ७८ ॥
इन्द्रप्रस्थ दिल्ली इन्द्रासन, जहं रहो तख्त आर्यन क्यार ।
शाहजहानाबाद नाम धर, करदयो मुसलमान दरबार ॥७९॥
आर्यवंशको काफिर बोलें, और कह हिन्दु करें बदनाम ।
हिन्द आर्यावर्त्त पुकारें, करदयो भारत देश गुलाम ॥ ८० ॥

---

* यवनोंने श्रीराम जन्मभूमि मन्दिरको मस्जिद बनाली!!!

छप्पय ।

" जहं विश्वेश्वर सोमनाथ, माधवके मन्दिर ।
तहं मसजिद बनगईं, होत अब अल्ला अकबर ॥
जहां वेदध्वनि करत रहत थे, सदा विप्रवर ।
तहं अब निशिदिन होत, वजीफ़नकी है बरबर ॥
जहं झूसी उज्जैन, रहे कन्नौज नगर वर ।
तहं अब रोवत स्यार, चहूं दिशि लखियत खंड़हर ॥
जहं धन विद्या वरसत रही, सदा अबै वाही ठवर ।
बरसत सबविधि बेबसी, अब तो चेतो बीरवर " ॥

वंश नशावें ऋषि मुनियनके, औ भ्रमाय करें गुमराह ।
हाय ! विधाता विन स्वामीके, को गह बांह बनावे राह ॥८१॥
पीर मौलवी मसी पादरी, ऋषि सन्ततिकों रहे विगार ।
एक लंग वेश्या यवन बढ़ावें, एकलंग मिसें करें प्रचार ॥८२॥
जागति हुय गई है भारतकी, जननी जौन आर्यन क्यार ।
करैं कुतर्कैं वेदधर्मपै, जड़से भारत रहे विगार ॥ ८३ ॥
मतवादी अति द्वन्द मचावें, हमपै जुल्म सहे ना जायं ।
छापा मारें वैदिकमतपर, हे! अखिलेश विश्वपतिराय ॥८४॥
सोचत सोचत पहर बीत गये, अंसुआ बहें नीरकी धार ।
धर्म कर्म कैसें जारी होय, कैसें वेद होय प्रचार ॥ ८५ ॥
बढ़े नास्तिक महा अनारी, अपने अपने पन्थ चलायं ।
निन्दा वेदधर्मकी करते, ऐंचा खैंची रहे मचाय ॥ ८६ ॥
ब्राह्मसमाजी वाममार्गी, आपा पन्थी रहे पुकार ।
जैन बौध और कूड़ापन्थी, घमसा मचे कबीरन क्यार ॥८७॥
धुना जुलाहिनके मज़हबकी, नाहीं गिन्ती मिलै शुमार ।
सुनै कौन ध्वनि अब वेदनकी, पापिनभारतदियाबिगार ॥८८॥
विप्र क्षत्री ऐशमें डूबे, वेद रसातल दिये पठाय ।
सुधिबुधिघरकीतनकौनाहीं, चोरडांकुअनदिया लुटाय ॥८९॥
एक मतेके सौ मत करदये, भारत नैया दई डुबाय ।
बात बोर दई ऋषिमुनिअनकी, वेदरीतिसबदईगमाय ॥९०॥
देश देशमें हंसी करावें, सत्पुरुषनकों नाव धरायं ।
आर्य शब्द सर्वोत्तम तजकें, डेम्फूल नेटिव कहलायं ॥ ९१॥
काला काफिर हिन्दू बनते, आर्य शब्दको सुनत डिरायं ।
कालरूप जूड़ी चढ़ आवै, हिन्दू कहें खुशी हुय जायं ॥९२॥
हाय ! लाज इनको नहिं आवै, वैदिक विद्या दई भुलाय ।
पढ़ें फ़ारसी अरबी उर्दू, अंगरेज़ीमें जन्म वितायं ॥ ९३ ॥

वेद धर्म अब कौन बचावे, को अब धर्म करे प्रचार ।
स्वारथ परतामें जग डूबो, को वेदनकी सुने गुहार ॥ ९४ ॥
याद आय गई तब गुरु आज्ञा, जगमें वेद होय प्रचार ।
जामन भाय गई पण्डितके, धर्म हेतु उठ भये तयार ॥९५॥
धन दौलत सुख भोग भवन तज, तजदईआशनौकरीक्यार ।
धर्म हेतु परिवार कुटुंब तज, तजदईजन्मभूमिघरबार ॥९६॥
आर्यभवन सुख धाम सकलतज, तज सर्वस्व धर्मके काज ।
मात पिता निज नारि छोड़ के, भये कटिबद्ध धर्मके काज ९७॥
आर्यभवन तज गृहसे निकसे, सच्चे शिष्य महर्षी क्यार ।
आर्य मुसाफिर पद ग्रहण कर, बनेश्रीवरपथिकहमार ॥९८॥
भूले भटकिनराह बताई, वैदिक मारग दिया बताय ।
मुहरा मारे मतवादिनके, वैदिक झंडा दिया घुमाय ॥९९॥
उदय अस्त और भूमण्डलपै, विजय दुन्दुभी दई बजाय ।
वेदनाद चहुं देशमें करके, गुरुकी आज्ञा दई सुनाय ॥१००॥
धन्य बहादुर लेखराम जो, मतबादिनको दिया हराय ।
अजय अटल जो वेद मार्ग है, सांचो करके दिया दिखाय ॥१०१॥
करकर बहसें तुम यवननको, आयत कलमा दिये छुड़ाय ।
अरब मदीना और मक्केमें, घोर खलबली दई मचाय ॥१०२॥
बलखबुखारा अदन सदनमें, क़ाबुल क़न्दहार बुग़दाद ।
तुर्किस्तान बलूचिस्तांमें, क्वेटा सिन्धु हैदराबाद ॥ १०३ ॥
टोंक उड़ीसा बंगालेमें, पश्चिम उत्तर अवध बिहार ।
भरतखण्डके खण्डखण्डमें, ब्रह्मादेश मण्डला धार ॥ १०४ ॥
सेतुबन्धु और रामेश्वरलों, दक्षिण खुरासान गुजरात ।
काश्मीर कन्नौज सितारा, देश ग़ज़नवी और क़िलात ॥१०५॥
रूम रूस जापान जर्मिनी, पूना खान्देश भूपाल ।
चीन अफ्रिका और अमिरका, सारेदेशगिसिरनैपाल ।१०६॥

उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, दिशा उपदिशा करें बखान ।
धन्य बहादुर लेखरामजी, दुर्लभ होना आप समान ॥१०७॥
घर घर कीर्त्ति बड़ाई छाई, पण्डित धन्य तोर अवतार ।
धन्य आपके गुरु दयानन्द, धनधनमातपितापरिवार ॥१०८॥
धन्य नगर जहां बसें पथिक वर, धन धन देश आर्यनक्यार।
धन्य आर्य्यावर्त्त बहादुर, जहां पर बीर लेयं अवतार ॥१०९॥
धन्य भूमि पंजाब देशकी, जाकी कोख लिये अवतार ।
धन्य आर्य्यावर्त्त निवासी, जिनको बोझा लिया उतार ॥११०॥
धन्यभाग हम दीन हीनके, जिनको मैटो भार अपार ।
बन्ध छुड़ाये ऋषिसन्ततिके, टारो भरतखण्डको भार ॥१११॥
बिछुड़े भाइन फेर मिलाये, बिछुड़े मात पिता परिवार ।
बज गयो डंका भूमण्डलपै, अक्षय धर्म आर्यन क्यार ॥११२॥
ग्रन्थ यावनी घायल कर दये, दै दै वेदमन्त्रकी मार ।
करो सामना न मतवादिन, चुपका बैठ रहे मन मार॥११३॥
भई न हिम्मत किहु मुल्लाकी, जो सन्मुख हुय देय जवाब ।
करो सामना ना काहूने, न काहूको पड़ो हियाव ॥११४॥
पीर मौलवी हार मानके, काफिर काफिर करें पुकार ।
भगी पादरी मौन साध गये, करो न काहूं धर्म विचार ॥११५॥
लेखरामकी तर्क मारमें, कोई यवन न आड़े पांवं ।
चुपां बैठ रहे मिर्ज़ा अहमद, वासी नगर क़ादियांगांवं ॥११६॥
रामबाण सम लेख पथिकके, सह न सका दीन इस्लाम ।
हल्ला मच गयो यवन गोलमें, कैसें क़ायम रहे कलाम ॥११७॥
बुद्धि विद्या नहिं कलमामें, नहिं कोई प्रबल तर्ककी बात ।
कथाकहानियनकीगाथा है, नाहींशान्तिमार्गसिखलात ॥११८॥
कौन बुते पर करैं सामना, प्रबल बहस आर्यन क्यार ।
वेद सूर्यके उदय भये पर, मिटैंअविद्यादिकअंधियार ॥११९॥

सोचें समझें खुदा मनावें, का विधि क़ायम रहे कुरान।
करे सामना कोपण्डितको, नहिं कोई दीखे बुद्धिनिधान ॥१२०॥
*नहिं है ज़माना नादिरशाही, फ़तवा क़तल देते कढ़वाय।
नहिं है ज़माना औरंगज़ेबी, जियतई ज़मीं देते गढ़वाय॥१२१॥
नहिं है ज़माना खूंरेज़ीको, जो भुस खाल देते भरवाय।
ज़ोर ज़ालिमनको नाहीं है, देते क़तल आम करवाय ॥ १२२ ॥
नहिं है ज़माना निर्दय्यनको, जो मनइनकी खिलें शिकार।
राज्य डांकुअनको नाहीं है, ऊधम मचै लूट और मार ॥१२३॥
राज्य विषय्यनको नाहीं है, त्रियां मरें ज़हर विष खाय।
पतिव्रननाशकऋषिकुलघातक, धर्मविगाड़ूनहीं दिखायं॥१२४॥
अब मीनाबाज़ार बन्दहैं, जहांगीर अकबर नहिं आयं।
राज्य विधर्मिनको नाहीं है, निर्दोषिनकों क़तल करायं॥१२५॥
राज्य भेड़ियनको नाहीं है, जो मानुषकों लेंय चबाय।
तिमिरलिङ्ग तैमूर निर्दयी, स्यार भेड़िया गये बिलाय ॥ १२६ ॥
अमलतास्सुबको नाहीं है, मन्दिर खुदें हिन्दुअन क्यार।
अमल अनीतीको नाहीं है, कन्या छिड़ें क्षत्रियन क्यार॥१२७॥
दखल जंगलिनको नाहीं है, जो विन खूनै कटा करायं।
दखल बूचड़नको नाहीं है, जो प्रजाकी खून बहायं ॥ १२८ ॥
अमल तेग़शाही नाहीं है, जनये छिड़ें ब्राह्मणन क्यार।
धूम ख़लीफ़नकी नाहीं है, उत्सव रुकें हिन्दुअन क्यार॥१२९॥
जनये पहिरे ज़ज़िया * लागै, नाहीं बने महीनन बार।
बिन पूछे जो कथा कहावे, बांध डरावें कारागार ॥ १३० ॥

---

* यह ऐतिहासिक विषय है इतिहास पढ़िये और सुनिये ॥

* ज़ज़िया=यवन राज्यमें यह दुखदायी टेक्स हिन्दुओंको देने पड़ता था न देने पर हिन्दू बड़ी दुर्दशा-आपत्तिमें फंसते थे (धर्म पतित बनते थे)।

*हाथी घोड़ा ऊंट आदि पै, हिन्दू हाय न चढ़ने पायं ।
बंद पालकी आदिका चढ़ना, हिन्दू दुखिया पैदल जायं ॥१३१॥
जोर राक्षसनको नाहीं है, हिन्दू बिकें कौड़ियन मोल ।
धूम नवाबोंकी नाहीं है, बालक कटैं गौ अनमोल ॥१३२॥
धर्मराज्य है महाराजाको, हिल मिल रहें सिंह अरु गाय ।
जुल्म करे सो दुःख उठावे, काटे उमर जेलमें जाय ॥१३३॥
बहस मज़हबोंके बारेमें, नांहि रहो ग़दर ख़लीफ़न क्यार ।
राजा प्रजाकों सुख होवै, ऐसो धर्म होय प्रचार ॥ १३४ ॥
हियांकी बातें तो हियां रहगईं, अब आगेको सुनो हवाल ।
लेखरामने लिखीं किताबें, कुरां हदीसनकेर ज़वाल ॥१३५॥
बहस मन्तक़ो करें पथिकवर, पूरो यवनपन्थको काल ।
पढ़े फ़ारसी अरबी उरदू, करें सामना कहा मजाल ॥१३६॥
बहसमें जीते ना कोई मुल्ला, तब यवननने करो बिचार ।
विद्याबलसों पेश न पैहैं, लेवो चलो शरण दरबार ॥ १३७ ॥
कैसहु दीनअहमदी रहजाय, होवे फ़तह मुहम्मद क्यार ।
लेखरामके कठिन लेखसे, जहं तहं निन्दा होय हमार ॥ १३८ ॥
निन्दा नबियनकी होती है, होय तौहीन पिग़म्बर क्यार ।
दीन इलाहीकी निन्दा है, निन्दा होय फरिश्तन क्यार ॥१३९॥
करी सलाहें तब यवननने, नालिश दायर देव कराय ।
कुतुबकाफ़िरां भस्म कराके, दीन इलाही लेव बचाय ॥१४०॥
क़ैद करावो लेखरामकों, बैरी दीन इलाही क्यार ।
अली अली और पैग़म्बर कह, अर्जीदावा करो तयार ॥१४१॥
अर्ज़ी देखी मजिस्ट्रेटने, आंकै आंक गयो सब बांच ।
वेदशास्त्रनकी सम्मति है, नहिं कहुं होय सांचको आंच ॥१४२॥
अर्ज़ी दावा ख़ारिज हुय गयो, हाकिम ज़िला केर इजलास ।
सुनत खबरियां प्रलय हुय गई, यवननउड़गयेहोशहवाश॥१४३॥

* विषलता ।) महाशय धर्मपाल बी० ए० कृत-राना प्रताप नाटक ॥।) पढ़िये ॥

होय हंसौआ चुपका बैठें, टीका लगै हमारें लील ।
तासोंभैयाफेंट बांधके, दायर करदेव डबल अपील ॥ १४४ ॥
सत्यके सन्मुख झूंठ न ठहरे, जैसे सूरज सन्मुख रात ।
तैसहिंन्यायाधीशके आगे, झूठे जाल धूल उड़जात ॥ १४५ ॥
राज हंसवत् करो फैसला, सच्ची न्यायशील सरकार ।
दूधको दूध पानीको पानी, जैसें हंस देत फटकार ॥ १४६ ॥
डिगरी जीते लेखराम जी, चेला श्रीदयानन्द क्यार ।
पेश न पाई कहुं यवननने, चुपका बैठ रहे मनमार ॥१४७॥
एक यवनने यतन विचारो, मारें बनें मुसाफिर वीर ।
यतन हमारे एक न चलहैं, हारें हारगई तक़दीर ॥ १४८ ॥
मिलके मारें लेखरामकों, जो शिरमौर आर्यन क्यार ।
पकड़े जैहैं फांसी पैहैं, क़ायम रैहै दीन हमार ॥ १४९ ॥
मरे बाद भी ऐश उड़ै हैं, बीबी मिलें खुदाके पास ।
रूप मोतियामिलेंछोकड़ा, मनके करहैं भोग विलास ॥१५० ॥
काफिर मारें गाजी होवैं, राज़ी होवैं खुदा रसूल ।
धुना जुलाहे दीन क़ौमके, हमको सय्यद करें क़बूल ॥१५१॥
(सो) ऐश बहिश्ती में अन्धा हुय, घरसेनिकरो भेषबनाय ।
ढूंढ़तपूछत पताचलावत, पहुंचो नगर लहौरै जाय ॥ १५२ ॥
कपटमुनी अनरथ हित डोलै, बाना धरो फ़क़ीरन क्यार ।
जाय विराजो आर्यभवन पै, पण्डित लेखरामके द्वार ॥१५३॥
सात क़दमसे करी बन्दगी, औ झुक झुक कर करी सलाम ।
नज़र घूमगईतब पण्डितकी, जिनको लेखराम है नाम ॥१५४॥
पूछें पण्डित तब कपटीसों, भैया कहा तुम्हारो नाम ।
कहांसेआयेकहांकोजैहो, आगे कहा तुम्हारो काम ॥ १५५ ॥
कौन देशके तुम वासी हो, सांची सांची देव बताय ।
कौन आपदाकेमारे हौ, जासों हमें जुहारो आय ॥ १५६ ॥

हाथ जोड़के कपटी बोलै, पण्डित सुनलेव अर्ज हमार।
देश हमारो बङ्गाला है, जहां पर जादूकी भरमार॥ १५७॥
नाम धामकी बात न पूंछो, पहिलें सुनलेव विपत् हमार॥
शरण आपहीकी आये हैं, तजके जन्मभूमि घरबार ॥१५८॥
काम आपही सों अटको है, ताईसों आये द्वार तुम्हार।
लाज शरण सब आप हाथ है, मेरीबिगरीदेवसुधार ॥१५९॥
हिन्दू कुलके हम बालक हैं, हिन्दू मात पिता परिवार।
पढ़ीफारसीहममुल्लासें, शिक्षासुनीमुहमदिनक्यार॥ १६०॥
लोभ अविद्याके वश हुय कर, चेला भये मौलविन क्यार।
वेदधर्मको छोड़ भूलसे, कलमा यवनकरो इख्त्यार॥ १६१॥
धोखे धड़ीसे धर्म छूट गयो, हमरें उठे करेजें पीर।
यतन एकहू ना सूझत है, जासों नाव लगै अब तीर ॥१६२॥
कोई शूरमा हमैं न सूझे, जाके मिलें होय निस्तार।
सर्व भांतिसे हम दुःख पाये, तब हम मनसों नगर तुम्हार॥१६३॥
नाम तुम्हारो सुन आये हैं, एजी पण्डित बात उनाव।
हुय निराश अब आश तुम्हारी, नैया मेरी पार लगाव ॥१६४॥
शरणागतकी शरण आप हो, राखो शरणायीकी लाज।
बहुत पापियनपारलगाओ, हमरिऊसिद्धकरोअबकाज ॥१६५॥
तुम्हैं छोड़ किहि जाय जुहारें, को अब करै पापियन पार।
द्वार तुम्हारे हम हारे हैं, आवै मनै करो निस्तार॥ १६६॥
दई दिलासा तब पण्डितने, पूरण करें तुम्हारो काम।
भूंखे होवो भोजन करलेव, कछुदिनहियांकरोविश्राम ॥१६७॥
कर प्रायश्चित शुद्धि सभामें, हिन्दू वंश देयं मिलवाय।
सुनके बातें लेखरामकी, कपटी बहुत खुशी हुयजाय॥ १६८॥
रोटी खावै घात बिचारै, कैसें जाके लेयं प्राण।
दीन अहमदीको बैरी है, धज्जी धज्जी करीं कुरान ॥१६९॥

पोल खोलदई है नवियनको, काटी आंत मुहमदिन क्यार ।
बहुतक मुल्ला शुद्ध करलये, मेरी नसलें दई बिगार ॥१७०॥
नाक चना मिर्जाहिं बिनवाय दये, छक्के पंजे दिये छुड़ाय ।
अज़मत खोई यवनपन्थकी, कलमारद्दो दयो कराय १७१॥
आज दावपै जू आयो है, मारें काम सिद्ध हुय जाय ।
निमकहरामी हायबहिंनेगो चहिंफिरपड़ेंनरकमेंजाय ॥१७२॥
जिन मारे अब लौट न जैहें, ऐसो समय न बारम्बार ।
ऐसो मौक़ा फिर नहिं मिलहै, जामें जाय करें संहार ॥१७३॥
ईदकों मारें हम काफिरकों, सीधे चले बहिश्तै जायं ।
हियांपरफतह मुहम्मदहुयहै, हुआंपर ऐशउड़ैहैं जाय ॥१७४॥
रोज़ ईदके लेखराम जी, गये उपदेश देन मुल्तान ।
घातमें डोलैदुष्ट कसैया, पूछे हाल भयो गल्तान ॥१७५।
कहां गये पण्डितकौओं ऐहैं, कौने हेतु गये बहिरार ।
खानपियन कछु नेक न भावै, हत्या शिरपैभई सवार॥१७६॥
तार प्रतिनिधीने देदीनो, पण्डित चले जाव कर्नाल ।
तारकेपहिलेपण्डितचलदयो, उनकोघरेलियाओकाल ॥१७७॥
पथिक दूसरे दिन घर आये, काफिर पहुंच गयो तत्काल ।
बढ़ी वेकली मन घातीके, पण्डित पूछें हाल हिवाल ॥१७८॥
कैसी तबियत आज तुम्हारी, दीखै तोर चित्त घबड़ाय ।
कठिन पेटमें पीर उठाहै, हमपै दर्द सहो ना जाय ॥ १७९ ॥
चलो डाक्टरपै सुन भाई, तेरो दवा देयं करवाय ।
चलभयोकपटीतबपण्डितसंग, पहुंचोवैद्यराजढिंगजाय ॥१८०॥
कहो डाक्टरने पण्डितसों, जाके दर्द कहूं है नाहिं ।
चित्त घाबड़ो है अतिजाको, दीखै रक्त जोशशिरमाहिं ॥१८१॥
कहो पलस्तर पेट चढ़ाले, कपटी हाथ बांध रहजाय ।
दवा पियनकी हमको देदेव, जासें दर्द पेट मिटजाय ।१८२॥

छिपो कटारी थी कुड़तामें, तासों दबा नहीं चढ़वाय।
चढ़तो पलस्तर जो छातीपर, जाती छुरी तुर्त दिखलाय॥१८३॥
पकड़ा जाती झिगड़ा मिटतो, काहे जाता सिंह बिलाय।
भावीवशकछुबननहिं आवै, भाविहिंहरो मुसाफिरभाय॥१८४॥
डाक्टर आदिकने समझायो, जू घरकरे तुम्हारे साथ।
हमें कछु छलिया सो दर्शत है, हे! आर्येन्द्र आर्यननाथ॥१८५॥
शरण हमारीतक आयो है, हमको बांह गहेकी लाज।
शुद्ध होन को जू आयो है, मन्स हमारो आर्यसमाज॥१८६॥
धर्म आर्यनके नाहीं हैं, धर्म युद्धसों पीठ दिखायं।
आर्यवंशके बालक कहुर, दैदये प्राण हकीकतराय॥१८७॥
सहीं आफतें धर्म न छाड़ो, ठाड़ें गर्दन दई कटाय।
तेगबहादुरके लड़कनने, निर्भय जानें दई गमाय॥१८८॥
प्राण छूटगये धर्म न छूटो, कीरति होय आर्यन क्यार।
(सो) बिनाशुद्धकरें जाय हटावें, तोमेरे जीवनको धिक्कार॥१८९॥
सत्यगुरूके हम चेला हैं, त्यागे धर्म हेतु जिन प्राण।
धर्मयुद्धसे पीठ न फेरी, करलयो घोर हलाहल पान॥१९०॥
जहां पसीना वहो स्वामीको, तहां मेरो वहै रक्तकी धार।
प्राण चले जायं कछु डरनहिं है, कैसहुंवेदहोयपरचार॥१९१॥
ऋषिऋण बोझाशिरपरभारी, रहरह मेरा प्राण घबड़ाय।
कैसे अब ऋषिआज्ञापूरीहोय, कैसेदेशआर्य कहलाय॥१९२॥
सो छलिया हुयहैतो क्या डरहै, लौहै प्राण चलो घरजाय।
वंश आर्यां नाहिं मुर्दा है, मेरे मरें नाश हुय जाय॥१९३॥
भावीवश उन एक न मानी, संगहि लेगये मौत लिबाय।
मोढ़ा डारदयो पण्डितने, घाती बैठगयो मुसक्याय ॥१९४॥
हाल ज़िन्दगी लिखें गुरूको, बैठे लेखराम महाराज।
घात लगायें कपटी बैठो, अबनाबचैं मुसाफिर आज॥१९५॥

आर्यपथिकवर मर्म न जानें, शिरपै काल रह्यो मड़राय ।
माता दुखियानेंक न जाने, कि मेरे जैहैं पूत विलाय ॥१९६॥
त्रिया पण्डित लेखरामकी, महलन भोजन करै तयार ।
घर संध्याको भयो बुलौआ, चलकेंजेंयलेवजिवनार ॥१९७॥
उठे मुसाफिर रङ्गमहलको, आंखें मीच खड़े ऐंड़ायं ।
करो झड़ाका दुष्ट यवनने, हूल कटारी दई घुमाय ॥ १९८ ॥
छुरी घुमावत आंतेंकटगई, मूर्छित भये आर्य शिर मौर ।
थाम अंतड़ियां शेर मर्दने, पकड़ो कपटी गुधी मरोर ॥१९९॥
आंतें उड़िल परीं बाहिरकों, कपटी भाजो प्राण बचाय ।
सुनकोलाहलरगरोझगड़ा,मातापथिकपहुंचगई आय ॥२०० ॥
लैयां पैंयां त्रिया धाई, भागत अधिक रोकलओ आय ।
छुरी उठाई तब पापीने, माताअंगुलीदईचुभाय ॥२०१ ॥
मार लकड़ियां बीरवधूकें, गलियन भाग गयो हरगाय ।
पतानलागोगायबहुयगयो, उसी गलीमेंगयोविलाय ॥२०२॥
धरी रसुइयां महलन बिलखें, देखन छाती फटे हमार ।
पथिकरक्तमेंपुस्तकसनगई, जीवनचरितमहर्षीक्यार ॥२०३ ॥
हाय ! कसैया धोखो देगयो, भारतको गयो जान निकार ।
निमक हरामी करी अनीती, तेरे जीवनको धिक्कार ॥२०४॥
निमक मुसाफिरको खाओ थो, सो तेरे हाड़न गओसमाय ।
होत न मरो वृथातू जाओ, मालिक केदई छुरी चलाय ॥२०५॥
मसला पुरुषनको सुनियत हैं, सूधे न जमें सींग करसार ।
पूंछ श्वान करयेमें राखी, तोऊ न सूधी भई गंवार ॥२०६ ॥
सो तजी दुष्टता न तैं डांकू, बसके शान्त राज्य सरकार ।
जहांबड़ेबड़े डांकूसाधूबनगये, औ तजदयेअत्याचार ॥२०७॥
तैंने सीख न छोड़ी औरंगजेबी, जानसे भैया दिये नशाय ।
तखत छीन लओ खासपिताको, बन्दीगृहमेंदियोडराय॥२०८॥

जिन रजपूतन राज कराओ उन्हींके बच्चन दिया कटाय।
जिन क्षत्रिनने प्राण बचाये, उन्हीकोजानेंलईं कढ़ाय ॥२०९॥
भिड़हाका बच्चा भिड़ही होवे, चाहैं लाखन करो उपाय।
तान शाहजहानी मनमानी, भाई भतीजे दिये मराय ॥२१०॥
बाप अलाउद्दीन न छोड़ी, मारा चचा जलालुद्दीन।
बात तुग़लकनकी ना छोड़ी, मारो पिता ग़यासुद्दीन ॥२११॥
बाप न छोड़ी वंश यावनी, क़ायम रही तुख़्मतासीर।
अरे पापी ! निमक हरामी, नाहक हनो मुसाफिर वीर ॥२१२॥
अजय धर्म है भरतखण्डको, अक्षय धर्म आर्यन क्यार।
जुल्म करेंते नाश न हुय है, वृथहिं करो अत्याचार ॥२१३॥
छुरी कटारी तेग़ मुड़मर्दी, भारत कठिन बजी तरवार।
निरअपराधी क़तल कराये, भारत बही रक्तकी धार ॥२१४॥
हिन्दू [illegible] भेड़की भरगये, काफ़िर कह कह दये मराय।
[illegible] जूझ, ठाढ़ें गर्दन दईं कटाय ॥२१५॥
[illegible] बकुन उड़ाये, बांस फांस नख दईं ठुकाय।
पेट [illegible] भुस खाल भराये, जियतें धरती दिये गढ़ाय ॥२१६॥
[illegible] और गोविंदसिंह, दे तकलीफें दिये मराय।
[illegible] और परताप बहादुर, गया धर्मपै जान गमाय ॥२१७॥
[illegible] अगनी जानें गये गमाय।
[illegible] सती भी रानी, धर्म हेतु तन गईं गमाय ॥२१८॥
[illegible] अगरेजें, ले लें भरतखण्डका नाम।
और बहादुर भारतवासिन, कर क़ैदी तुम करो गुलाम ॥२१९॥
[illegible] ऊधम तुम करलये, अन्धाधुन्धी लई मचाय।
[illegible] न राखो जुल्म करनमें, न कछु बाक़ो धरो उठाय ॥२२०॥
[illegible] देश जू करदयो, भारत ऊजड़ दयो कराय।
[illegible] आपनो देश हमारा, जैसे ओला जाय बिलाय ॥ २२१ ॥

हमला कठिन सहे भारतने, तौऊ जीवत रहा बहाल।
अबवयानाशधर्मकोकरिहौ, क्याभारतकोकरोज़वाल॥२२२॥
अब जगदीश्वरकी कृपासे, डंका बजै आर्यन बयार।
धर्मराज्य है महाराजाको, नहिं चलसके अत्याचार॥ २२३ ॥
अब क्या अकिले लेखरामके, जूझें वंश नाश हुय जाय।
लेखरामको नाम अकेलो, दीहै वैदिक विजय कराय॥२२४॥
जहं जहं रक्त गिरो पण्डितको, लाखन उठें मुसाफिर वीर।
वेदधर्मकी ध्वजा उठैहैं, सांचे धर्म वीर रणधीर ॥ २२५ ॥
नशे धर्म अब न भारतको, तोकों दण्ड देय भगवान।
कुलकलङ्कतेरोधोओनधुयहै, धिक्धिक्तोकोंकहेजहान॥२२६॥
भरतखण्डकी जान मुसाफिर, हरे समाजनके तू प्राण।
विश्वघात हिंसा शिर तेरे, चढ़ी अधर्मी अधम अजान॥२२७॥
भरतखण्ड तू ऊजड़ कर दयो, शूनो कर दयो देश हमार।
शूरवीर एक देश हितैषी, हनो दुष्ट क्योंरे बटमार ॥ २२८ ॥
अरे नीच न तजी नीचता, पूरण करके दई दिखाय।
सांचे वचन नीतिके कर दये,*नीच अन्य ना यवन सिवाय॥२२९॥
*हे! अम्बआर्यै बसुधे! माता, कस तू सहै पापियन भार।
शुद्ध पवित्र हनें हितकारी, दे विश्वास विविध प्रकार॥२३०॥
हियांकी बातें तो हियां रह गईं, अब पोछेके सुनों विचार।
माता रोवै लेखरामकी, अपनी छोड़ छोड़ डिड़कार॥२३१॥
कारण कर कर त्रिया रोवै, जियरा मोर लिखें घबड़ाय।
रुदन घोर सुन भीड़ें जुर गईं, धाये नारि पुरुष अकुलाय॥२३२॥

---

* उपकारिणिविस्रब्धे शुद्धमतौ यः समाचरति पापम्।
तं जनमसत्यसंधं भगवति वसुधे! कथं वहसि।

* चाण्डालानां सहस्रैश्च सूरिभिस्तत्त्वदर्शिभिः।
एकोहियवनः प्रोक्तो न नीचो यवनात् परः ., (वृहच्चाणक्ये)

जैसे बिजुली गिरे गगन तें, जैसे कमलन पड़ै तुषार।
तैसहिं मृत्यु लेखरामकी, गई आर्यनके दिल फार॥ २३३ ॥
खबर पहुंच गई मुंशीरामपै, वासी शहर जलन्धर क्यार।
आर्यप्रतिनिधीकेअधिपतिहैं, रक्षकआर्यसमाजनक्यार॥२३४॥
लोटें पेटें पथिक पलंग पर, छोड़ें प्राण आजकै काल।
छुरो करेजेमें लागी है, लै गया डांकू प्राण निकाल ॥२३५॥
सुनत खबरियां प्रलय हुय गई, मूर्छित गिरे भरारा खाय।
घरी एकमें जगी मूर्छा, हमपै व्यथा कहो ना जाय ॥२३६॥
रुदन सुनें तें छाती फाटै, जियरा टूंक टूंक उड़जाय।
हे जगदीश्वर! जा कैसी भई, खिलो चन्द्रमा गयोविलाय॥२३७॥
कैसे धीरज मनमें धारें, क्या अब करें हाय! भगवान्।
भारत नैया अधफर डूबी, पड़ो दुःख पै दुःख महान्॥२३८॥
मेंहकी बूंदन आंसू बरसें, हमपै व्यथा कही ना जाय।
जैसें तैसें धीरज धरकें, पहुंचे लेखराम पहं जाय ॥ २३९॥
क्या गति भैया तेरी हुय गई, कछु तो कहो मुसाफिरबीर।
धरके धीरजसिंह तड़प्पै, अपनी थांम करेजें पीर ॥ २४०॥
"शुद्ध होनको जो आयो थो, ताहिने दयो करेजो फार।
घाव करेजें गहरो बैठो, अब न बचि है पथिक तुम्हार"॥२४१॥
बोलें मुंशी रामबहादुर, पण्डितसावधान हुय जाव।
घाव सिमैंहैं दवा करैंहैं, ए जी! पण्डित बात उनाव॥२४२॥
धर पीनस पण्डितको ले गये, सूधे सरकारी अस्ताल।
बड़े डाक्टर सों विन्तीकी, इनको कैसहु करो बहाल ॥२४३॥
सिविल सर्जियनने तत्क्षण ही, क्लोरोफारम दयो सुंघाय।
देकर क्लोरो वेसुध करकें, घाव आंत सब दिये सिमाय ॥२४४॥
नशा उतर गयो होशमें आये, बातें करें मुसाफिर बीर।
मुखतें हाय नेंक ना निकरी, ना कहुं कही करेजें पीर ॥ २४५॥

ऊंचो चहरा ना नीचो भयो, नेंकहु पथिक नहीं घबड़ायं ।
नेक उदासीना तन दर्शै, नाहीं बिगड़ो चित्त दिखाय ॥२४६॥
निर्भय धर्मवीर पण्डितने, आर्यवंशको दिया जगाय ।
धर्मभावदृढ़रहोपथिकतन, ब्राह्मणपनको दिया दिखाय ॥२४७॥
आलो हिम्मत देख पथिककी, डाक्टर तलक अचम्भो खायं ।
धन्य बहादुर बीर आर्या, जिनकोंमौतदेखघबड़ाय॥ २४८ ॥
सिंह बहादुर पथिक पुकारें, मुंशीराम हियां चल आव ।
सुनो अखीरी विनय हमारी, दादा बार बार बलजावं ॥२४९॥
तजो आशरा तुम जीवनको, अबना बचि है पथिक तुम्हार ।
काम आर्यनको छूटत है, छूटत वेद धर्म प्रचार ॥ २५० ॥
ईश करैहै तो फिर करि हैं, धरि तनु वेद धर्म प्रचार ।
सङ्ग आर्यनको छूटत है, ईश्वर नाव लगावै पार ॥ २५१ ॥
सर्व आर्यनसों विन्ती है, भैया सुनियो कान लगाय ।
"बन्दकामतारीख़ न करियो, चहिंतनप्राणरहेंकैजायं ॥२५२॥
* कथन महर्षी पूरो करियो, इतने वचन माफ हुय जायं ।
काम महर्षीको न छुड़ियो, चहिंतनधजीधजीउड़जाय ॥२५३॥
जरा शोच त्रियाको नहिंहै, नहिं परवाह मातुकी मोय ।
दुःखमरणकोतनकौनहिं है, नहिंकछुक्लेशचित्तमेंहोय ॥२५४॥
पर कर्ज महर्षी शिर अति भारा, कोमेरोबोझालेय उतार ।
निश दिन खटकेऋषिकीआज्ञा, जगमेंवेदहोयंप्रचार ॥२५५॥
है मन मेरे आशा भारी, तुम सब करिहौ वेद प्रचार ।
पूरो काम ऋषीको करिहौ, करिहौ वेदधर्म प्रचार ॥२५६॥
आर्य स्त्रीधर्म वचै हैं, बेड़ा खेय लगैहैं पार ।
भरतखण्डके वालक कन्या, वैदिक धर्म करें प्रचार ॥२५७॥
सब मिल भैया करो सहारा, बूडत भारत लेव बचाय ।
ऋषिमुनियनकीबातराखलेव, विजयदुन्दुभीदेवबजाय ॥२५८॥
अब मिलन अखीरीतुमसोंमेरो, भैयासुनलेवकानलगाय ।

ईश मिलैहै तो फिरमिलि हैं, ईशहिंदीन्हींसंगछुड़ाय ॥२५९॥
मरे हमारे बैठ न रहियो, दीजो नैया पार लगाय ।
अन्तिम विन्ती यहीहै सबसे, लीजोवैदिक धर्मबचाय॥२६०॥
कर अन्तिम उपदेश बहादुर, गयो ओ३म्सों ध्यान लगाय।
जपै जाप गायत्री मन्त्रको, स्तुति पढ़ैवोर चितलाय ॥२६१॥
सन्ध्योपासन पूरण करके, कीन्हों वेदमन्त्र * उच्चार ।
ओ३म्शान्तिः (३)करकेबहादुर, स्वर्गहिंगओछाड़संसार॥२६२ ॥
खबर फैल गई नगर भरेमें, छिप गयो चन्द्र आर्यनक्यार ।
जिहि सुन पाईसोघरधाओ, अपनाछोड़छोड़घरवार ॥२६३॥
खुली दुकानन पल्ला पड़ गये, सारे बन्द भये बाज़ार ।
पड़ीं मूर्छित त्रियां रोवें, ऊंची छोड़ छोड़ डिड़कार ॥२६४॥
शोक आर्यनके घर छायो, कोई रंधे भात ना खाय ।
जो सुन पावै मौत पथिककी, मूर्छितगिरैसनाकाखाय ॥२६५॥
चढ़ी रसुययां बन्दें हुय गईं, खान पान सब दिये बिसार ।
भूंख प्यास लड़कनकी उड़गई, काहु न तनकीरहीसम्हार २६६॥
दयानन्द कालेज बन्द भयो, दफ़्तर रुके प्रतिनिधिन क्यार ।
दफ़्तरबन्द आर्यनके भये, बन्दें सर्व भई चटसार ॥२६७ ॥
शोक मातमी देशमें फैलो, हम पै व्यथा कही ना जाय ।
सभा समाजें शोकमनावें, चहुंलंगदुःखहिदुःखदिखाय॥२६८॥
ले सिंहासन धर्मवीरको, जल्दी तुर्त करो तय्यार ।
लै विमान पण्डितकोचलभये, योधाजौनआर्यनक्यार॥२६९॥
चारों ओरसे भीड़ें जुड़गईं, जिनकी नाहीं मिले शुमार ।
अटकर बांधैं पार न पावें, कमसे कमथे बीसहज़ार ॥२७०॥
बीच चौक अरु चौराहिनपै, नेक न दलकी मिले शुमार ।
तिल डारो भुयमें ना सूझै, लखै न हाथों हाथ पसार ॥२७१॥

---

* ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्नआसुव॥यजुर्वेद॥

हाहाकारी मची नगरमें, घर घर छाय रहो कुहराम ।
पुरुष स्त्री व्याकुल रोवें, लै ले लेखरामका नाम ॥ २७२ ॥
चढ़ीं अटारिन त्रियां बिलखें, जहं तहं करें पुष्प बौछार ।
अतर गुलाबनकी पिचकारीं, छूटें लेखरामपैंभार ॥ २७३ ॥
घर घर शोक मातमी छायो, घर घर नारि पुरुष बिलखायं ।
लेखराम बिन सूनो भारत, चहुंदिशिअन्धकारदिखलाय ॥२७४॥
बिन स्वामीको देश आर्यो, को अब वैदिक धर्म बचाय ।
नाव पथिक तुम अधफर छोड़ी, को अब बेड़ा पार लगाय ॥२७५॥
शिक्खवीर मछरीलों तलफें, रोवें व्याकुल अश्रु बहाय ।
कौन देशकी सुध अब ली है, चले पथिक तुम सङ्ग छुड़ाय ॥२७६॥
थाम करेजो हिन्दू रोवें, दुखड़ा कहत गरो भर आय ।
बीस कोटि हिन्दुनके मुखिया, सो क्या ऐसें जायं बिलाय ॥२७७॥
हाय ! निशाचर असुर अभागे, तोपें परै गज़बकी मार ।
देश हमारो सूनो कर दयो, भारत बगिया दई उजार ॥२७८॥
कर कर कारण माता बिलखै, हमपै एक कही ना जाय ।
सुनत करेजो टुकड़ा होवै, बाणी आर पार हुय जाय ॥ २७९ ॥
लोक चराचर क्षोभित होवैं, जू मन होय मरें विष खाय ।
कहत माजरा जियरा फाटै, लिखते क़लम बन्द हुयजाय ॥२८०॥
सभा हज़ूमें तुमने जीतीं, लाखन मुल्ला दिये चुपाय ।
सो क्या ताक़त नहिं अब लेखा ! अकिलीमातहिंदेयचुपाय ।२८१॥
नेक तो बेटा मुंहसे बोलो, कछु माताको देव जवाब ।
काम महर्षी पड़ो अधूरो, ईसा मूसा करें ख़राब ॥ २८२ ॥
हाय ! पूत हा ! प्राण पियारे, तुम तो चल भये सङ्ग छुड़ाय ।
कौनको करके हमको छोड़ो, सांची सांची देव बताय ॥ २८३॥
*पारसाल मथुरा उत्सव पर, नातिहु तुमने दयो गमाय ।

---

* सन् १८९६ में मथुरा समाजके वार्षिकोत्सव पर रोगग्रस्त पुत्रकी औषधादिकी चिन्ता भूल निश्चिन्त उपदेश देतेरहे एवं पुत्र मृत्युको प्राप्त हुआ ।

खाली गोद बहूकीडारी, अब हम किसकी आश लगायं ॥२८४॥
तुम बिन सूनी दुनियां हमको, नेंक तो बेटा बात उनाव ।
रांड़ अनाथिन माता बिलखै, कछु तो बेटा देव जवाब ॥२८५॥
मुंशीराम बीर समझावें, माता विनती सुनो हमार ।
होना मानो ना मन अपने, कै मारे गये पूत हमार ॥२८६॥
हम सब वासी भरतखण्डके, धर्मके बेटा लगें तुम्हार ।
आर्य मुसाफिर लेखरामजी, धर्मके भ्राता लगें हमार ॥२८७॥
कौन बातको हीना मानो, सो तुम माता देव बताय ।
करिवेमरिवेकोंहमहाज़िर, हुकुम करो सो लायं बजाय ॥२८८॥
जौन बातकी आज्ञा करि हौ, सो हम तुर्त्त करें तत्काल ।
हुकुम स्वप्नहूंमें सुन पै हैं, पूरो करें होय किन काल ॥२८९॥
दुःखके मारे बोल न निकसे, मूर्छित बैठ गये हरगाय ।
रोवत पीटत गिरत गिरावत, पहुंचे चिता घाट पैं जाय ॥२९०॥
वेदरीतिसे चिता बनाई, तापै वीर दयो पौढ़ाय ।
अगर तगर केसर कस्तूरी, बिच बिच दियो कपूर धराय॥२९१॥
घृत आदिक साकल्य सकल ले, अर्थी खूब दई रचवाय ।
वेद रीतिसे भई अन्त्येष्टी, शोभा कछू कही ना जाय॥२९२॥
भस्म पथिकतनु करो आर्यन, लै लै ओङ्कारका नाम ।
पञ्चतत्त्वसबतत्त्वमेंमिलगये, गयो आत्मा स्वर्गके धाम ॥२९३॥
*काया नाश शील नश्वर है, धन सम्पति क्षणभंगुर जान ।
मरणजन्मनहिंदेहको छूटै, करो यत्न चहिंकोटिमहान् ॥२९४॥
सरग मड़ैया सब काहूकी, कोई आज मरे कोई काल ।
योगी साधू राजा बाबू, पड़ें एक दिन कालके गाल ॥२९५॥

---

* कायः सन्निहितापायः सम्पदः क्षणभङ्गुराः ।
समागमाःसापगमाः सर्वेषामेव देहिनाम् ॥१॥

॥ भजन ॥

कालकी आज्ञामें कैसे कैसे ज़ोरावर चले । क्या मजाल इस हुक्मकी कोई अदूली कर सके ॥ राव चले राने चले धनवान और निर्धन चले । कौन स्थिर रह सके जब कालका चक्कर चले ॥ छोड़कर सारी हुकूमत सिविल के अफसर चले । सरिश्तेके मुन्शी और बाबू छोड़कर दफ़्तर चले ॥ सरदार सूबेदार और कप्तान बल मेजर चले । कर्नल चले जनरल चले सार्जन चले सर्जन चले ॥ कार्तूस और बारूदके सिक्के पटियोंमें भर चले । पलटन रिसाले तोपखाने त्याग कर लश्कर चले ॥ मुख़्त्यार और वुकला बैरिस्टर कुल मुक़दमा हर चले । झूठकी तक़रीर मन्तक़ इस जगह क्योंकर चले ॥ वैद्य और हुकमां यहां से पढ़के निब अकबर चले । नुसखा न पाया मौतका हैरान हो डाक्टर चले ॥ ज़मींदार पट्टीदार नम्बरदार नम्बर पर चले । अन्तकों बेदख़ल हो देखो वह धरनीधर चले ॥ हट्टीवाल साहूकार कोठीदार सौदागर चले । खोटे सौदेमें रुपैया मुफ़्त कर अबतर चले ॥ हलचलीमें कालकी सब कांपते थर थर चले । आंसू बहाते चल पड़े न ज़ोर चले न [illegible]र चले ॥ सूरज चले तारा चले चांद और नवग्रह भी चले । कालकी गर्दिशमें प्रतिदिन पृथिवी महेश्वर पर चले ॥ कलियुग चले सतयुग चले त्रेता चले द्वापर चले । राम चले रावण चले अमीचन्द नन्द कुंवर चले ॥ कालकी आज्ञामें कैसे कैसे ज़ोरावर चले । क्या मजाल इस हुक्मकी कोई अदूली कर सके ॥

स्वार्थी जीतेजी मुर्दा हैं, छलबलसों निज पेट बढ़ायं ।
मरें सड़ें खटिया पर पेट, कौआ गीधहु मांस न खायं ॥२९६॥
शूर वीर रणधीर बहादुर, अमर नाम जगमें करजाइं ।
देश धर्म और पर हितकारण, हंस हंस जानें देत गमाय ॥२९७॥
सो धन्य मृत्यु उनकी कहियत है, जो परकारण तजें प्राण ।
धन्य बहादुर लेखराम जी, हुय गये धर्म हेतु कुर्बान ॥२९८॥
आर्यपथिक अब स्वर्गपथिक भये, छोड़ सर्व संसार असार ।
दुखहीदुःख देशमेंहुयगयो, बिछुरणकठिनमुसाफिरक्यार ॥२९९॥
*उत्तम प्राण चले जांय निकसे, वियोग न उत्तम आप समान

* वरं प्राणपरित्यागो न वियोगोभवादृशैः ।
प्राणाजन्मान्तरेभव्य न भवन्तिभवद्विधाः ॥ २ ॥

मिलें प्राण फिरजन्मान्तरमें, दुर्लभ मिलनो आपसमान॥३००॥
कर उपकार देशको तुम गये, क्या मुख लै हम करें बखान।
वीर मुसाफिरकी वरणीको, भयो न है ना होय समान॥३०१॥
जहं जहं विचरे श्री स्वामी जी, जहं जहं करी धर्म प्रचार।
तहं तहं चलफिर पता चलाओ, जीवन चरितकरी तय्यार॥३०२॥
जीवन चरित लिखो स्वामीको, नाना विधिके कष्ट उठाय।
वनबन अटनदेश भ्रमण कर, जीवन पुस्तक दिया बनाय॥३०३॥
जीवन चरित खतम होने तक, अपनोहि जीवन दिया गमाय।
सफल ज़िन्दगी करी पथिकने, गुरुको जीवन चरित बनाय॥३०४
जहं जहं चरण ढुरे स्वामीके, तहं तहं अलख जगाई जाय।
जहां पसीना गिरो स्वामीको, तहां तुम दीनो रक्तबहाय॥३०५॥
जहं तन पीड़ा भई स्वामीके, तहं तुम आंतें दईं कटाय।
हाय! कहा गुण कहैं तुम्हारे, बूड़त भारत लओ बचाय॥३०६॥
वेद धर्म और परहित कारण, तुमने दुखड़ा सहे महान्।
तुमसों पथिक उरिनहमनहिं हैं, तुमभारत लगदिये प्राण॥३०७॥
पथिक दर्श विन हम सब रोवें, तुमने कहाकरी भगवान्।
कौन विपत्के हम मारे हैं, हे जगदीश्वर! कृपानिधान॥३०८॥
बढ़ी विपत् पर विपत् रात दिन, बढ़े दुःखके सिन्धु अपार।
*दुःख सिन्धु एक उतर न पावें, दूजो तुर्तहोय तय्यार॥३०९॥
छिद्र पाय अनरथ वहु होवें, दुखड़ा देख दुःख बढ़ जायं।
जहि गतिभरतखण्डकी हुय गई, आफ़तएक कही न जाय॥३१०॥
धरती माता तुम फट जावो, भारतवासी जायं समाय।
रहै बांस ना बजै बांसुरी, झगड़ा टंटा जायं पटाय॥३११॥
कहां तक दुखड़ाआंखिन देखें, कहांतक पीरथाम रहजायं।
एक दुःख होवे सहलेवें, दुःखके सिन्धु सहे ना जायं॥३१२॥

---

*एकस्य दुःखस्य न यावदन्तं गच्छाम्यहं पारमिवार्णवस्य।
तावद्द्वितीयंसमुपस्थितं मे छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति॥ १॥

दयानन्द गुरुदत्त बहादुर, क्या कुछ हमको गये भुलाय ?
तोलों विछुरनलेखरामका, जल्दोभयोउपस्थित आय ॥३१३॥
गुरू दयानन्दसे कहं मिलि हैं, कहं गुरुदत्त मिलें गुरुभाय ।
कहं अबदर्श पथिककेहुयहैं, कहंव्याख्यानहायसुनपायं ॥३१४॥
को अघभूलिन राह बतैहै, को अब वैदिक धर्म बचाय ।
को मतवादिनमौन सधावैं, कोअब नैया पार लगाय ॥३१५॥
को मक्कामें वेद सुनै है, को अब यवनन आर्य बनाय ।
बलख बुखारा को सरकर है, को क़ाबुलमें वेद सुनाय ॥३१६॥
को अफ़रीका को अमरीका, को जापान जगावै जाय ।
को लन्दनमेंमण्डनकरिहै, कोअबचीनकोचेतचिताय ॥३१७॥
रूम रूस बग़दाद अरबमें, को अब वैदिक धर्म सुनाय ।
रेगिस्तानी तृषित आत्मन, वेदामृत को पान कराय ॥३१८॥
विना बहादुर लेखरामके, को अब वैदिक विजय कराय ।
मनकीलालशामनहीमें रहगईं, सबउम्मेदेंगईं बिलाय ॥३१९॥
नाथ हाय ! हम अधम अभागे, कौलों झेलें दुःख अपार ।
जब सुधिआवे लेखरामकी, धुनें माथ बैठें मनमार ॥३२०॥
दोष कौनको देयं दयामय, करम भाग्यकी खोट हमार ।
रहें रोयमनमार अभागे, अपनो अपनो ठोंक कपार ॥३२१॥
तुम्हें छोड़कर हे ! जगदीश्वर, कासों विन्ती करें पुकार ।
संकट काटोअबभारतको, त्राहित्राहिकरुणा आगार ॥३२२॥
विना तुम्हारे हे ! करुणानिधि, को अब अर्जी सुने हमार ।
दीन हीन हम भारतवासिन, अबतो ईश्वर लेव उबार ॥३२३॥
कर देव कृपा हे ! करुणानिधि, ऐसेहि बीर लेयं अवतार ।
शर्मा बिनवै जगदीश्वरसों, जल्दी हरो भूमिको भार ॥३२४॥

॥ भजन ॥

हा ! बीर लेखराम आर्योंके पथिक वर । भारतकी नाव

छोड़के तुम कितको ली डगर ॥१॥ वैदिकधरमकी नाव छाड़ चल दिये किधर। मज़हबके भंवर उठरहे को लाय पार पर ॥ २ ॥ झोंका पवन यवन के लगें, मंझधार पर। ऊधम किरानी कर रहे भारतकी भूमि पर ॥ ३ ॥ आफतमें फंसी नाव हा! दर्शन दो आन कर। सङ्कट है कठिन धर्म पर अब जल्द पार कर ॥ ४॥ अब आओ सिंह भारत व्याकुल है देशभर। रोती है धर्म पत्नी माता विशेष कर ॥५॥ व्याकुल हैं आर्यभ्राता हे! आर्यपथिक वर। रोती है भूमि भारत आसूं बहाय कर ॥ ६ ॥ दिलदर्द हाय! को सुने भारतका ध्यान धर। ग़मख़्वार कोई देशमें आता नहीं नज़र ॥ ७ ॥ वैदिक धर्म अब कैसे जाय मुल्क यवन पर। बलिदान कौन होय अब वेदोंके धर्म पर ॥ ८ ॥ कहो जायं पथिकवीर हम अब किसके द्वार पर। भारतकी नाव डूबती अब जल्द पार कर ॥ ९ ॥ शर्मा विनय ओङ्कारसे कर जोड़ जोड़ कर। आर्यपथिकसे वीर फिर दर्शन दें आनकर ॥१०॥

☞॥ श्री लेखराम वेद प्रचार कोष की सहायता करो ॥

अये! दोस्तो अब देश तो। सुनसान हो गया।
भारतका धर्म बीर तो। कुर्बान हो गया ॥ १ ॥
आर्य पथिक मुसाफिर। बलिदान हो गया।
वैदिक धर्मका रक्षक। एक रत्न खो गया ॥ २ ॥
भारतका भाग्य जागके। फिर हाय! सो गया।
अफ़सोस हाय! देश फिर। बीरान हो गया ॥ ३ ॥
जागो धरमके प्रेमी। अब बहुत सो लिया।
शर्मा पथिकसे सिंह बिन। हा! देश लुट गया ॥४ ॥

अब तो भारतवासी जागो, बेड़ा डूब गयो मंझधार।
नावक धर्म बहादुर डूबो, बेड़ा कौन लगै है पार ॥ ३२५ ॥

भारत भूमी ऊजड़ हुय गई, तुमको दबी छःमासी नींद ।
होशमेंआओआखें खोलो, त्यागोकुम्भकरणकी नींद ॥ ३२६॥
कौनकी निदिया तुम सोवत हो, मारे गये मुसाफिर वीर ।
सिंह आर्यावर्त्तको जूझो, बेड़ा कौन लगैहै तीर ॥३२७॥
जन्म जिन्दगी धर्म बचाओ, बूड़त भारत लओ बचाय ।
बने मुसाफ़िर घरघर डोले, भारतवासिनगये जगाय ॥३२८॥
कहुं पैदल कहुं चढ़े सवारी, भारतवर्ष गये पंजियाय ।
कहुंप्यासेकहुं लंघे भूखे, भटकत फिरे मुसाफिर भाय ॥३२९॥
कहू पलंग पर कहुं धरती पर, सोये पथिक धर्मके काज ।
छोड़ि नौकरी पुलिस हाकिमी, घूमत फिरे देशके काज ॥३३०॥
कहुं प्रायश्चित्त करे बहादुर, बिछुड़े भाई दिये मिलाय ।
कहुं ईसाइनकों ललकारे, कहुं यवननसे धर्म बचाय ॥३३१॥
ईसा मूसा पीछें हट गये, भजे मुसल्मां पीठ दिखाय ।
प्राण हथिरियापै धर लीन्हें, वैदिक डङ्का दयो बजाय ॥३३२॥
सहीं आफतें नानाविधिकीं, भजे न रणसे पीठ दिखाय ।
मथुरा वृन्दावन गोकुलमें, प्राणपुत्र तकदयो गमाय ॥३३३॥
सर्वसु अर्पण देशकों करके, आतें तलक गयो कटवाय ।
अन्तसमयतकधर्मबचायो, धर्महिंकरते गयोबिलाय ॥ ३३४ ॥
आतें कटगईं नहिं घबड़ाये, नेक न मुखसे निकरी हाय ।
त्रियाके हित मदद न चाही, ना माता हितकहीसहाय ॥३३५॥
धर्म तुम्हारे अर्पण करके, गयो मातुकी बांह गहाय ।
तुम्हें मुनासिब अब ऐसो है, कि असनेमें होव सहाय ॥३३६॥
जैसी माता लेखरामकी, तैसिहि माता लगे तुम्हार ।
धर्मवीरकी पत्नी माता, अपने ऊपर समझो भार ॥३३७॥
कर प्रबन्ध पथिक माताको, वैदिक धर्म करो परचार ।
काम पथिकको पूरो करके, देव भारतको भार उतार ॥३३८॥

सदा न विपदा पड़े देश पै, भैया सदा न दुखड़ा होय ।
सदा न मानुष देही पैहौ, यारो सदा न जीवन होय ॥३३९॥
तासों जल्दी फेंट बांधके, अब कछु करतव देव दिखाय ।
पुरुषा तुम्हरे अगजाहिर भये, वैदिकधर्म गये फैलाय ॥३४०॥
नाम आर्यनके सुनियत है, शाखे गाय सर्व संसार ।
कर तनमन धन वेदके अर्पण, करो डांकुअनको संहार ॥३४१॥
धर्म हेतु जिन जानें दैदईं, ठाड़ें गर्दन दईं कटाय ।
करण दधोचवेणु राजाबलि, सर्वसुपरहित गये लगाय ॥३४२॥
विक्रम भोज भर्थरी योगी, राजा हरिश्चन्द्र महाराज ।
राज्य अर्प्पदयेपरहित कारण, सर्वसु तजो धर्मके काज ॥३४३॥
रामचन्द्र रघुवंशी राजा, योगी कृष्णचन्द्र महाराज ।
राज्य छोड़ दये दुःख उठाये, केवल वेद धर्मके काज ॥३४४॥
शङ्कर गुरू दयानन्द स्वामी, तनमन धन सब गये लगाय ।
अधम नास्तिकन वेद विरोधिन, धर्मकेप्रेमीगये बनाय ॥३४५॥
लेखराम गुरुदत्त बहादुर, वैदिक शिक्षा गये सुनाय ।
अभिमानिनके मान घटाये, वैदिकडंका गयेबजाय ॥३४६॥
कहांलों वरनैं सत्पुरुषनकों, कीरति लिखें लेख बढ़जाय ।
क्या मुखले हम करें बड़ाई, कैसे कीरति कहें बनाय ॥३४७॥
धन्य बहादुर देशहितैषी, धन धन तुमको कहै जहान ।
बुद्धिहीन मतिमन्द अभागी, क्या गुण कीर्तन करें बखान ॥३४८॥
देश हेतु अरु परस्वारथ लग, तुमने बीड़ा लयो उठाय ।
हमें भरोसो बहुत आपको, नैया दीहौ पार लगाय ॥३४९॥
हुय कटिबद्ध वीर डट जावो, कर पुरुषारथ देव दिखाय ।
समय सोयवेको नाहीं है, भैया सुनियो कान लगाय ॥३५०॥
भारत वीर मुसाफिर जूझो, खाली भारतवर्ष दिखाय ।
अपनी अपनीमें सब लागे, को अब वैदिक धर्म बचाय ॥३५१॥

अब है रणी वीर बहादुर, भैया सावधान हुय जाव ।
घातराखलेवऋषिमुनियनकी, बूड़तवैदिकधर्मबचाव ॥३५२॥
तन मन धन कर वेदके अर्पण, परस्वारथमें देव लगाय ।
सब मिल भया करौ सहारा, बूड़त भारतलेव बचाय ॥३५३॥
वेद धर्म अरु देशकी खातिर, तन मन धन सब देव लगाय ।
बन कायर अब ना घर बैठो, भजो न रणसे पीठ दिखाय ॥३५४॥
मोह छोड़देव धन दौलतको, झूठे झगड़ा देव भुलाय ।
परम प्रेमसे मिलके भाई, धर्महेतु कुछ करो सहाय ॥३५५॥
* धर्म अकेलो संगहिं जैहै, भैया सुनियो कान लगाय ।
संग छोड़ि हैं भाई बन्धू, त्रिया लड़का पीठ दिखायं ॥३५६॥
बांध मरघटा पै लै जैहैं, और होली सी देयं फुंकाय ।
पीठ फेर घरको चलदीहैं, धर्म अकेलो संगहिं जाय ॥३५७॥
रुपया पैसा नहिं संग जैहै, सारो यहां पड़ो रहजाय ।
मालखज़ाना सब रहजैहैं, भाई बन्धु नारि छुटजायं ॥३५८॥
राजा बाबू माया वाले, गये अन्तकों हाथ झुलाय ।
पड़ेखज़ानावृथालुटगये, ना कोई लैगयो सङ्ग लदाय ॥३५९॥
सो हाथसे दीही यश रहजैहै, शाखे चले अंगारूं जायं ।
जुगजुगनामभूमिपैचलिहै, रहिहौस्वर्गलोकमेंजाय ॥ ३६० ॥
धर्म कमाई सत्पुरुषनकी, वेद धर्ममें देव लगाय ।
रक्षावेदधर्महितभाई, ऋषि मुनि जानें गये गमाय ॥ ३६१ ॥
छोटे २ लड़का भरतखण्डके, धर्महेतु हुय गये बलिदान ।
धर्म न छोड़ा दुःख उठाये, हंस हंस आखिर तजे प्राण ॥३६२॥
ग्यारहवर्षको राय हक़ीक़त * तजे धर्मरक्षा हित प्राण ।

---

* मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठ समंक्षितौ ।
विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति ॥ मनु० अ० ४—श्लोक २४१ ॥

* हक़ीक़तराय)॥ तथा धर्मवीरोंका वृत्तान्त पढ़िये ॥

लड़का गोविंदसिंह गुरूके, धर्महेतु हुयगये कुर्बान ॥ ३६३ ॥
वेद धर्म और देशकी खातिर, शूरवीर हुयगये बलिदान ।
देदें जानेंरक्षाकरगये, सह सह कठिन धार कृपाण ॥ ३६४ ॥

भजन--गजल ।

मरते मरते मरगये, लेकिन न छोड़ा आनको । आके देखो दोस्तो ! इस राजपूती शानको ॥ सैकड़ों झेलीं मुसीबत, रंजोग़म लाखों सहे । जान तक देदी, बचाया लेकिन दीन ईमानको ॥ ख़ाकसे पैदा हुए, और ख़ाक ही में मिल गये । धर्मपर क़ायम रहे, समझा नहीं कुछ जानको ॥ प्रताप शिवजी रामका, क्यों नाम है विरदे जुबां । कौमकी ख़िदमतमें छोड़ा, राजके सामान को ॥ याद रक्खो दोस्तो ! हर्गिज़ भुलाना मत कभी । दर्द दिलके वास्ते, पैदा किया इन्सानको ॥ लेक्चरोंसे मजलिसोंसे, लम्बी चौड़ी बातसे । दिलको नफ़रत हो गई. नफ़रत है इनसे कानको ॥ कर दिखाओ कुछ, अगर है हिम्मतो मर्दानगी । जंगजू कब छोड़ते हैं, जंगके मैदानको ॥ है अबस इस चन्दरोज़ा, ज़िन्दगानीका ग़रूर । मरते दमतक धर्मको, क़ायम रखो ईमानको ॥

वाहो भरतखण्डके वासी, वेदधर्मका नाश करायं ।
तन मन देना कठिन काम है, हाथ मैल देते घबड़ायं ॥३६५॥
लगे अगिन सर्वसु जर जावै, चोर मूस डांकू लेजायं ।
राजदण्ड प्रजा सह लेवे, धर्म हेतु न हाथ उठायं ॥३६६॥
रंडी भडुअनकी तानन में, सौ सौ रुपया देयं गहाय ।
आप लुटें औरन लुटवावें, गावं भरेमें द्वन्द्व मचायं ॥३६७॥
मार पीट कर लूट अनाथन, दाम रंडियनको दिलवायं ।
बन चपरासी द्रव्य उगाहें, डार रण्डियनके घर आयं ॥३६८॥
तिन दामनके लोग मुचण्डा, टैक्स रण्डियनके भरवायं ।
करे रोक जो धन देनेमें, तो व्यभिचारी बहुत सतायं ॥३६९॥
बांध काफिला घरको घेरें, रण्डी महिमा खूब सुनायं ।
जो कहुं इनका दाव न लागे, खेत काट चोरी कर ल्यायं ॥३७०॥
दान पुण्यको झूठ बतावें, वेद धर्मको हानि करायं ।
धर्म हेतु कौड़ी ना देवें, सुनत नाम जूड़ी चढ़ि आय ॥३७१॥

पड़ै सावका जब दीवेको, रूभा छोड़ घरको भगजायं।
देत दान औरनको रोकें, धर्म्म काममें विघ्न डरायं ॥३७२॥
दान करनमें भांजी मारें, सत्यधर्मकी नाव डुबायं।
कर संगी नरकै लेजावें, घोर नरकमें देयं डराय ॥३७३॥
छोड़ कुसङ्गति इन पापिनकी, ऋषिमुनियनकी बातबनाव।
भरतखण्डको दुखड़ा मेंटो, बूड़त बेड़ा पार लगाव ॥ ३७४॥
भरै नबरियामें जो पानी, अरु घरमें जो बाढ़े दाम।
दोनों हाथ उलीचे भाई, पूरण करै धर्मके काम॥ ३७५ ॥
भरतखण्ड रूपी नैयामें, भरे पाप रूपी जल भार।
वीर बहादुर करो सहारा, घटे पाप होवै उद्धार॥ ३७६ ॥
अब क्या भैया चुपको बैठे, ऐसो समय न बारंबार।
आओसब मिलकरें सहारा, जल्दीहरें भूमिको भार ॥३७७॥
पड़ी आपदा भरतखण्डपै, भैया जल्द करो उद्धार।
उठो बहादुर भारतवासी, जल्दी करो वेद परचार ॥३७८॥
विन उबरे भारत नहिं रैहै, जे दिन कहिवेको रह जायं।
रुपया पैसा मैल हाथको, जो पोंछो कर देव गहाय ॥३७९॥
मौन साध चुपको क्या बैठे ? क्या अब बैठे मुंधीभुकाय ?
फेंट बांध ठाड़ेहुय जाओ, अपनो करतव देव दिखाय॥३८०॥
वेद धर्म प्रचार करनमें, तन मन धनसे करो सहाय।
सात पांचकीलकड़ो मिलके, एक जनेकाबोभ कहाय॥३८१॥
करो कसूरी न देनेमें, न कछु बाकी धरो उठाय।
दिलकी घुंडी खोल बहादुर, दयाधर्मअब देव दिखाय॥३८२॥
धर्मसे प्यारो क्या धन तुमको, जो अब बैठे मूड लचाय।
जो कुछ होवैकरो सहारा, यज्ञ सफलपूरण हुय जाय ॥३८३॥
लाख अशरफीसे पैसा लों, जो कुछ होवे देव गहाय।
अभी न होवै फिर दै दीजो, अपनोदेवो नामलिखाय॥३८४॥

अब तो भैया छोड़ काहिली, तनमनधनसे करो सहाय ।
वैदिक धर्मप्रचार मण्डली, दई प्रतिनिधीनेखुलवाय ॥३८५॥
पण्डित लोग धर्म प्रचारक, बहुतक भर्ती लिये कराय ।
नगरनगर औरगांवनगांवन, वैदिक धर्म रहे फैलाय ॥३८६॥
आर्य प्रतिनिधी देशमें क़ायम, वैदिक धर्मकर्म सिखलाय ।
दान पुण्य कोई कछु देवे, सो सब वहां देव पठवाय ॥३८७॥
शर्मा विन्ती करे आपसों, थोड़ी थोड़ी करो सहाय ।
जन्मभूमिका दुखड़ा मेटो, लेवो वैदिक धर्म बचाय ॥३८८॥

॥ कवित्त ॥

धन्य भई उनकी जननी, जिन आरत भारतके दुख टारे । रविज्ञान प्रकाश कियो जगमें, अरु अन्धनिशाके मिटे सब तारे ॥ दिनरात जगाय रहे हमको, दुखभंजक रूप पिता जो हमारे । शोक !!! यही हमरे उरहै, जब नींद गई तब आप पधारे ॥ १ ॥ देख दीन भारत दयालु ह्वै के दीनानाथ कछुक उद्धारनकी इच्छा उर धारी है । श्रीमत् परिव्राजकाचार्य्य स्वामी दयानन्द नाशन अविद्या भा पूर्ण औतारी है ॥ सत्योपदेश दै सुधारी मति बहुतनकी, शुद्ध वेद रीति जहां तहां सचारी है। शोक ! ! ! अल्पकालहीमें दुष्टन दियो कालकूट, पावन भा आत्मा सुस्वर्गको सिधारी है ॥ २ ॥ तदनन्तर शिक्षा विकाश गुरुदत्त कियो, बूड़त शोक सागर भा कछुक आधारी है । मन्दभाग भारत न रहन पाये थिर कालकी करालतासे कायसुविसारी है ॥ यवन मुख मर्दन प्रसिद्ध भा प्रतापी एक, विचरत महीमें आर्यपथिक नामधारी है । शोक ! महाशोक ! ! ! लाहौरमें अनीति भई छल करि घातकने छुरी पैनी उर मारी है ॥ ३॥ साधु आर्यपथिक कहाआनें छल घातकके शुद्ध कीनों सदा सत्य उपदेशा है । लज्जित हुय म्लेच्छन मतो विचार, मारनको प्रेष्यो बधिक एक धारि क़पट वेषा है । साथ रहि थोड़े दिन जानि राह रीति सब, त्याग दया धर्म दियो सबन कलेशा है ॥ शोकमें निमग्न आज भारत सुसभ्य जन, लेखराम शर्मा कियो प्राण निश्शेषा है ॥ ४ ॥ माता पुकारे हा तात ! कहा कीन्हों, पत्नी पुकारे मोहि त्यागि कहां धायहौ । इष्टमित्र सज्जन सुनेंगे उपदेश कापै, यवन अधर्म अब कैसे दरशाय हौ । चित्तापकर्षक व्याख्यान अब-

दीहै को, आर्य वीर कहो कहां दरश दिखाय हो । शोक ! सर्व भारतमें छायो समाज बीच, लेखराम शर्मासे विज्ञ कहां पायहो ॥ ५ ॥ सत्यसिद्धान्त सदा दूंढ़े मथिशास्त्रनकों सबन सुनावे सदा जाको यह काम है । कपट कुरानके प्रसिद्ध किये खोजि खोजि, यवनहृदय तासें भयो अति वाम है । धर्मोपदेश दै प्रचार कियो वेदमार्ग, छायो महीतलमें कीरति युत नाम है । भा बलिदान अल्प आयुमें स्वधर्म हित, ऐसो महावीर आर्य पथिक लेखराम है ॥ ६ ॥ मारच महीना सन् अठारहसौ सत्तानवेमें छठवीं तारीख बधिक भयो कपट घाती है । देव प्रकृतिमें विश्वास करि राखो पास, जान्यों न प्रपञ्च विधिवश कियो साथी है ॥ गोधूलि वेला छल घात करी दुष्ट यवन, सुन यह शोक फटल सभ्यनकी छाती है । लेखराम शर्माको अटल नाम राखिवेकों, सर्व-आर्य्यबन्धुनसों विनय करी जाती है ॥ ७ ॥ कछुक सहायता दै कोष एकत्र करि, माता अरु पत्नीको रक्षा विचारो जी । चिन्ह स्मारक पाठशाला पुस्तकालय रचि, शेष सिद्धान्त अब शीघ्र ही प्रचारो जी ॥ घातक पकड़ैयाको सहस्र पारितोषिक दै, सम्मति रखैयाकों नीतितैं निवारोजी । केवल मुख वक्तृतातें होत न प्रबन्ध कछु, एक एक मास आय दान चित्त धारोजी ॥ ८ ॥ हे बन्धुवर्गो ! दुर्घटना सुनी मैंने यह, प्रथम निज स्वामि मुख महाशोककारी है । पुन आर्यभास्करमें देख्यो अचानक बध रामनारायण मित्र आज्ञा उचारी है ॥ लेखराम शर्माको मैंने हू दरश कियो, ऐसो मतिधीर कहां सत्य उपकारी है ॥ शोक ! महाशोक ! ! ! पंजाब वीरभूमि मध्य ऐसे महाआत्माकी आत्मा सिधारी है ॥९॥ हे परमात्मन् ! जो है तू सत्य न्यायकारी, घातकके दण्डको विधान शीघ्र कीजिये । वाके सहचारी हू हुयके सब नाशमान, कर्मफल भोग हेतु दुर्गति हू दीजिये । वीर आर्यपथिककी सुआत्मा सुज्ञानमयी, सीताराम ताहि प्रभु अंक भरि लीजिये । वेद जय होगी सदा सत्यधर्म दृढ़ रैहै वाणी सुमेरी यह सकल पतीजिये ॥ १० ॥ (सीताराम शर्मा मैनपुरी)

हे वेदमतावलम्बी भ्रातृगणो ! अब तो जागो ॥

क्या आप इसी घोर अविद्यान्धकारमें पड़े रहोगे अथवा कभी उठोगे भी? ज़रा आंखें तो खोल देखो क्या हो रहा है । ऋषि मुनियोंका नाम निशान मिटाजाता है। ऋषिकुलमेंसे सैकड़ों ईसाई मुसल्मान हो गये और हो रहे हैं। वैदिकधर्म के ऊपर मतवादियों के अहर्निश कठिन आक्रमण (हमला)

हो रहे हैं और समूल नष्ट करनेके लिये सैकड़ों उपाय कर रहे हैं। कहां तक लिखें आप स्वयं आंख पसार देखलें आपके ही भाइयोंमेंसे चालीस लाख ईसाई बनगये और कई करोड़ मुसल्मान हो गये! इन लोगोंके चारों ओर जो दल बादल दृष्टि आते हैं वे सब आप ही के बिछुड़े हुए भाई बन्धु हैं (कहीं बिलायत से जहाज़ भर के नहीं आये हैं)!!!

अब टुक आप ही सोचें विचारें कि जिस कोष (ख़ज़ानामें) से ख़र्च तो होता जावे और आमदनी न हो तो वह कब तक ठहर सकता है—एक दिन अवश्यही खाली हो जायगा। यही ठीक दशा आर्यवंशकी हो रही है कि जिसमेंसे अनेक भांतिसे लोग घटते बिछुड़ते जाते हैं और आमदनीकी कोई भी सूरत नहीं। बड़े कष्टकी बात है कि आप ऋषिमुनियोंके वारिस (सन्तान) हो करके भी उनकी छोड़ीहुई धर्मपूंजी (विरासतकी) रक्षा न करें। इतिहास पुराण देखो सुनो वेद धर्मके वास्ते ऋषिमुनियोंने कैसे २ दुःख सहे यहां तक कि प्राण गवा दिये--परन्तु आपके सुपुर्द सुरक्षित करके ही वेद धर्म छोड़ गये। ऋषिसन्तान! अब उठो सब मिल कर इस ऋषिविरासत (धर्मपूंजी) की रक्षा करो। और जो रक्षा करते हों उनकी आप तन मन धनसे सहायता करें करावें, ऐसे धर्मसंकटमें सोना अच्छा नहीं॥

लानत ऐसी निद्रा पर जब घरमें घुंस रहे चोर!!!

आपको स्मरण हो कि इस मतवादरूप घोर संग्राममें आपका एक धर्म भाई पं० लेखराम शर्मा वैदिकधर्मकी रक्षा करता हुआ और मतवादियोंके--मोर्चाओंको तोड़ता हुआ धर्म बलिदान हो गया है। आपकी सेवा करते २ प्राणार्पण कर दिये (धोखेमें एक यवनसे ६ मार्च १८९७ को क़तल किया गया) क्या धर्मवीरकी यवनोंसे कोई शत्रुता थी जो इस तरहसे क़तल किया गया नहीं २ बात केवल यह थी कि यवन आपके धर्मको बिगाड़ते थे और धर्मवीर रक्षा करता था और आख़िर इसी काममें उसकी ज़िन्दगी समाप्त हुई। विचारशील पुरुषो! अब आपका भी धर्म (फ़र्ज़) है कि धर्मवीरकी माता और धर्मपत्नीकी सहायता करें और उपदेशक नियत करके धर्म प्रचारका भी काम जारी रक्खें। इस काममें धनकी बड़ी आवश्यकता है-अतः धर्मानुरागियोंसे निवेदन है कि धर्मकाममें यथाशक्तिदान दें। और जो कुछ दान एकत्रित हो श्री लेखराम वेदप्रचार कोषाध्यक्ष (श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त देश फर्रुखाबाद) को भेज देवें वहां पर वेद प्रचारका कामजारी हो रहा है॥

आप जैसे धर्मात्माओंकी धर्म सहायतासे यह धर्मकोष पूर्ण हो जायगा; आपके ऋषिमुनियोंकी बात रह जायगी परमात्माकी कृपा और आप धर्मात्माओंकी हार्दिक सहानुभूति तथा सहायतासे अब वेद सनातनधर्म अवश्यमेव बच जायगा और एक दिन ऐसा होगा, कि भूमण्डल भरेमें फिर वेद-नाद वा धर्मप्रचार होते सुनाई देगा ॥

धर्ममें मत करहु आलस, उठो कटिको बांध के।
धर्म केवल साथ जैहै, प्राण जहैं छांड़ के॥
सुत नारि पित और मात सब, इतही पड़े रहजायंगे ।
चहिं करो यत्न करोड़, ते स्थिर न रहने पायंगे ॥

आपका शुभचिन्तक—बाबूराम शर्म्मा–इटावा।

(गज़ल श्री १०८ स्वामीजीके वियोगमें)

कहां है वह गुल जो देश भारतको । अज़मरे नौ जिला गया है ॥ १ ॥
ख़िज़ांका मौसम मिटाके यारो । बहार हरसूं खिला गया है॥ कहां है० ॥२॥
ख़ज़ाना अपना जो लुट चुका था । जो अपना विरसा है गुम चुका था ॥
जो अपनी पूंजी है छिन चुकी थी। हमारी हमको दिला गया है ॥ कहांहै०॥३॥
वह उठ चुकी थी जो वेदविद्या । वह मिट चुकी थी जो मातृभाषा ।
वह उठ चुके थे जो वर्ण आश्रम । दुबारा उनको जिला गया है॥ कहां है ०॥४॥
वह बुतपरस्तीकी गुदड़ी जिसमें । हज़ारों मनके लगे थे पेबन्द ॥
उतार कर तनसे वह दियतका । वह जामा हमको मिला गया है॥ कहां है०॥५॥
मिसाल मेंडक कमाल खुश थे । लिबास कीचड़में सन रहा था ॥
बदनसे आने लगी थी बदबू । इतरसे हमको निहला गया है ॥ कहां है०॥६॥
कोई था बदहोश मयको पीकर । कोई था ऐयाश धनको पाकर ॥
उतर गया सब नशा वह यारो कि जाम अमृत पिला गया है ॥ कहां है० ॥७॥
जो सम्प्रदायोंमें मुनक़सिम हो । था एकका एक जानी दुश्मन ॥
वह एक रस्ता बताके । बिछुड़े हुओंको बाहम मिला गया है॥ कहां है० ॥८॥
कमालसे अपनी इल्मियतके । जलालसे अपनी मारफतके ॥
मुख़ालिफ़ोंके भी दिलको एक दम। वह मर्द मैदां हिला गया है ॥ कहां है० ॥९॥
दया थी अव्वलमें जब कि उसके । तो पीछे आनन्द क्यों न होता ॥
दयासे आनन्द करके शर्मा । वह स्वर्गको खुद चला गया है ॥ कहां है० ॥१०॥